केशव शरण की कविताएँ

लमही

यह इक्कीसवीं सदी का
सन् चौबीस है
और यह
सन् चौबीस का लमही
जिसमें चौबीस प्रतिशत भी
गाँव नहीं बचा है
एक हेरिटेज गाँव
गाँवों के महान कथालेखक
प्रेमचंद का गाँव
जिसे देखा था पहली बार
बीसवीं सदी के सन् अस्सी में
जो लगा था बींसवीं सदी के
सन् अठारह वाला ही गाँव
जिसमें घीसू, माधव, मैकू
और हमीद आदि रहते थे

अब जाने कौन रहते हैं
इन शहरी कॉलोनियों के अंदर
इस लमही में

पेड़ के नीचे

एक पेड़ के नीचे
उसके तने से
पीठ सटाए
मैं सोच रहा था
जीवन
सुख-दुख का भोग है
कोई इससे मुक्त नहीं हो सकता

पत्ते झरे जा रहे थे
विचार चले आ रहे थे
सुख-दुख के अलावा भी एक आयाम है
अकेलापन जिसका नाम है
जिसके व्यक्ति के अंदर बनने में
समाज का काफ़ी योग है

पत्ते खड़के हवा से
तो खुली आँख
लचक रही थी टहनी
और शाख़

पेड़ वन का
कुछ दूर तक अकेला था
मैं दूर-दूर तक तन्हा
जैसे बाहर
वैसे अंदर

हाइवे से गुजरते हुए

यह हाइवे है
जो आकर्षित करता है
ड्राइवर को
मुझे आकर्षित करते हैं
शीशे के पार
जगह-जगह
गाँवों को जाते रास्ते

उन रास्तों पर जो
दो या दो से अधिक लोग
आते-जाते दिखाई देते हैं
सोचता हूँ
उनमें से एक मैं हूँ
दूसरा या दूसरे
मेरे दोस्त हैं

मेयार भाई

(बनारस के प्रसिद्ध शायर मरहूम मेयार सनेही जी की याद में)

बस की खिड़की के पार
वो रहा
मेयार भाई का धाम
जहाँ हम आते थे
कभी दोपहर
कभी शाम
घर से सीधे
या लौटते हुए
उतर जाते थे
यहाँ

अब कौन सुनेगा
कौन सुनाएगा
वो पुरानी ग़ज़लें
वो ताज़ा कलाम

मिलकर लगता था उनसे
कोई है हमारा
जो हमें छोड़ने
सड़क तक आता है
और जब तक हम
उसकी नज़रों से
ओझल नहीं हो जाते हैं
वहाँ से नहीं जाता है!

संगीत की ओर

लहरों की ओर गये अरसा हुआ
पत्तों की ओर गये अरसा हुआ
पंखों की ओर गये अरसा हुआ
मन उनके लिए तरसा हुआ- लेकर
संगीत के पास आ गया
और संगीत की लहरियों, उठानों और उड़ानों में
उन सब को पा गया

अरसे तक
मनहूस ख़ामोशियों के बाद
आज यह सांगीतिक उल्लास उठा है
अम्बु-अम्बर-अवनिबद्ध
मधुर, मार्मिक, ध्वनिबद्ध
संकटमोचन मंदिर के परिसर
सालाना संगीत समारोह में
मन के अंदर

पेड़

अजब है यह जीव
जो एक टाँग पर खड़ा है
बेहद लम्बी-चौड़ी उंगलियों वाला
जिसका पंजा
ज़मीन के अंदर गड़ा है
इसके कई-कई हाथ हैं
जो चारों दिशाओं में ऊँचे-ऊँचे फैले हैं
रंग में यह हरा है
नाम इसका पेड़ पड़ा है

मगर इसके होंठ कहाँ हैं ?
इसके कान कहाँ हैं ?
कैसे इसका संवाद हो पाता है
मूर्धन्य मालियों और महात्माओं से ?
इसका दिल कहाँ है ?
इसकी आँखें कहाँ हैं ?
जिनसे यह लकड़हारे को देख लेता है
और काँप उठता है इसका दिल
जो धड़कता है
बरखा-बहार के लिए
पृथ्वी से प्यार के लिए

यह जगह

यह जगह
सनराइज प्वाइंट

कही जाती है
अंग्रेज़ी में

यहाँ से
सूर्योदय का सम्पूर्ण नज़ारा
पूरी तरह
हिंदुस्तानी है
विविध रंगों में

नदी का पानी है

उगता हुआ सूरज
एक बड़ी-सी गुलाबी बिंदी है
यहाँ चिड़ियां जो बोल रही हैं
जिस भाषा में
वह बहुत पुरानी हिंदी है

केशव शरण

एस 2/631-3 के के, कुंज विहार कॉलोनी, सेंट्रल जेल रोड,

सिकरौल, वाराणसी 221002. फोन नं. 9580619244, 9415295137